अजायब बानी

मासिक पत्रिका

जून-2021

RNI No - RAJHIN/2003/9899

मासिक पत्रिका

अजायब बानी

वर्ष–उन्नीसवां अंक–दूसरा जून–2021

भजन–अभ्यास

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा अभ्यास में बिठाने से पहले

3

नाम की महिमा अपरम्पार

(एक शब्द)

4

सतसंग– परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

सन्तों की महिमा

गुरु नानकदेव जी की बानी (08 जनवरी 1992) मुम्बई

5

परम सन्त कृपाल सिंह जी महाराज

23

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविंद से.....

भजनों द्वारा प्रार्थना

(24 मार्च 1989) 16 पी.एस. आश्रम राजस्थान

32

प्रकाशक : **सन्तबानी आश्रम** 16 पी.एस. रायसिंह नगर–335 039 जिला–श्री गंगानगर (राजस्थान)
संपादक : **प्रेम प्रकाश छाबड़ा** 99 50 55 66 71 80 79 08 46 01
विशेष सलाहकार : **गुरमेल सिंह नौरिया** 96 67 23 33 04 99 28 92 53 04
उप संपादक : **नन्दनी** सहयोग : **ज्योति सरदाना, परमजीत सिंह व डॉ. सुखराम सिंह**

e-mail : dhanajaibs@gmail.com 231 Website : www.ajaibbani.org
RSG-01, V.I.P. Colony, Ridhi-Sidhi Enclave Ist, Sri Ganganagar - 335 001 (Rajasthan)

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा अभ्यास में बिठाने से पहले

भजन-अभ्यास

परमपिता परमात्मा सावन-कृपाल के चरणों में नमस्कार है, जिन्होंने गरीब आत्मा पर रहम किया अपनी भक्ति का दान दिया और भक्ति करने का मौका भी दिया है। सूफी सन्त फरीद साहब ने कहा है:

कूकदयां चंगेदंया मत्ती देंदया नित्त
जो शैतान बजाया से कित फेरे चित्त

सन्त-महात्माओं ने संसार में आकर बहुत जोर देकर जीवों को समझाया कि खुदा की बंदगी के बिना छुटकारा नहीं। आप खुदा की बंदगी करें लेकिन जिसका मन, शैतान ने खुदा की तरफ से अलग कर दिया है उसे जो मर्जी समझा लें वह समझता ही नहीं। आप कहते हैं:

उठ फरीदां सुत्तयां झाड़ू दे मसीत
तू सुत्ता रब जागदा तेरी डांडे केही प्रीत

हमने अपने हाथ-पैरों से जो धर्मस्थान बनाए हैं हर रोज सुबह उसमें से कूड़े-करकट को बाहर निकालते हैं और धूप जलाते हैं। सच्ची मस्जिद, हरि मंदिर या चर्च जिसे परमात्मा ने खुद बनाया है जिसमें वह खुद बैठा है उसमें काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार का इतना ज्यादा कचरा है क्या हमने कभी इसकी सफाई की तरफ तवज्जो दी?

इसलिए फरीद साहब कहते हैं कि तू सुबह उठकर ऊद्यम कर अपने इस शरीर की मस्जिद, मंदिर के अंदर सिमरन का झाड़ू लगा। सिमरन का झाड़ू आत्मा की सफाई करता है, विषय-विकारों का कूड़ा-करकट बाहर निकाल देता है।

हाँ भई! रोज की तरह आँखें बंद करके सिमरन करें।

***

नाम की महिमा अपरम्पार

नाम की महिमा अपरम्पार, जावां सतगुरु के बलिहार, x 2

पलक झपकते कट जाते हैं, उसके कष्ट कलेश,
जिसके मन मंदिर में रहते, सतगुरु जी हमेश, x 2
और नाम से बड़ा नहीं है, कोई भी आधार,
नाम की महिमा.....

नाम जपा कबीर नानक ने, जग में किया उजाला,
लेकर प्रभु का नाम पी गई, मीरा जहर प्याला, x 2
नित नियम से करो नाम से, जीवन का श्रृंगार,
नाम की महिमा.....

प्रभु से बेमुख रहा जो कोई, उसने जन्म गंवाया,
उसका जीवन सफल हो गया, जिसने नाम ध्याया, x 2
जो भी चढ़ा नाम की नईया, उतर गया भव पार,
नाम की महिमा.....

नाम की महिमा नाम ही जाने, यां जिस नाम ध्याया,
'अजायब' कृपाल के चरनी लग के, कोटि-कोटि यश गाया, x 2
जो भी द्वारे आया गुर के, उसका बेड़ा पार,
नाम की महिमा.....

सतसंग– परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

08 जनवरी 1992

सन्तों की महिमा

गुरु नानकदेव जी की बानी

मुम्बई

मैं सावन–कृपाल का धन्यवादी हूँ जिन्होंने इस गरीब आत्मा पर दया–मेहर की। मुझे उस चलते–फिरते परमात्मा के सामने बहुत से भजन बोलने का मौका मिला है। कबीर साहब कहते हैं:

गुरु गोबिंद दोनो खड़े किसके लागू पाए
बलिहारी गुरु आपणे जिन गोबिंद दिया मिलाए

सेवक के आगे दोनों हस्तियाँ कण–कण में व्यापक परमात्मा और परमात्मा ने जो अपना नुमाईंदा बनाकर संसार में भेजा था वह भी आ गया। सेवक को पता है कि परमात्मा तो पहले भी मेरे अंदर व्यापक था लेकिन मैं शान्ति प्राप्त नहीं कर सका और उसकी रहमत से खाली रहा। परमात्मा के अंदर होते हुए भी मैंने अनेकों जन्म पाए, अब मैं किस पर बलिहार जाऊँ? मैं उन गुरुओं पर बलिहारी जाऊँ जिन्होंने नाम का भेद दिया। गुरु ने गरीब आत्मा पर रहम किया, उस दया–रहम करने वाले का शुक्राना है।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे कि कौवो को कूंजो की सार का क्या पता है? कौवो की उड़ान सीमित होती है लेकिन कूंजो की उड़ान बहुत लम्बी और ताकत वाली होती है। जो कूंजो के साथ उड़े वही उनकी सार को समझ सकता है कि इनके अंदर उड़ान भरने की कितनी ताकत है। हम जीव दुनिया की मैलों में लिपटे हुए हैं, हम **सन्तों की महिमा** को सन्तों के सार को और नाम की महिमा को किस तरह समझ सकते हैं?

इतिहास गवाह है कि महात्मा जब भी संसार में आते हैं गिनती के आदमी ही उन्हें समझते हैं और उनसे फायदा उठाते हैं। दुनिया तो बहुत बड़ी है लेकिन सतसंगी बहुत थोड़े हैं, गिने जा सकते हैं।

महाराज सावन सिंह जी अक्सर कहा करते थे कि हम उतनी देर ही यह कहते हैं कि हम सतसंग में जाते हैं, हमने गुरु से नाम लिया है, हम सतसंगी हैं जब तक हमारी आँखे बंद हैं। जब आँखें खुल जाती है हम अंदर जाकर सच्चाई को अपनी आँखों से देख लेते हैं फिर पता लगता है कि हमें सतसंग में कौन बुलाता है, कौन अभ्यास में बिठाता है। हम किस तरह नामदान के लिए परमात्मा के चुनाव में आए? फिर ये बातें दिल से निकल जाती हैं, गुरु ही गुरु दिखाई देता है।

जब इस गरीब आत्मा पर दया–मेहर हुई तो मैंने कहा, ''जब आप चाहते हैं तो जमीन के नीचे बिठा देते हैं, जब आप चाहते हैं तो आसमान में उड़ा देते हैं, सब कुछ आपके हाथ में है।'' गुरु अर्जुनदेव जी कहते है:

आपण लिए जे मिले बिछड़ को रोवन

हे परमात्मा! अगर हमारे अपने बस में होता तो हम तुझसे बिछुड़कर रोते क्यों फिरते? अगर हमें यह समझ होती कि हमने परमात्मा या गुरु से मिलना है तो हम इस दु:खी दुनिया में हाजिर न होते। आज से पहले जिस भंडार परमात्मा के पास से हमारी आत्मा आई है उससे मिले होते। हम आज इस परेशानी की दुनिया में इसलिए बैठे हैं कि हमने आज तक अंदर अपनी आत्मा को परमात्मा के साथ नहीं मिलाया। कबीर साहब कहते हैं:

जो प्रभ किए भगत ते बाहंज तिन ते सदा डराने रहिए

हे परमात्मा! जो तेरी भक्ति के चुनाव में नहीं आए, तेरे नाम के हकदार नहीं बने, हमें सदा ही उनसे बचाकर रखना। सन्तों ने सदा यही माँगा है, ''हे परमात्मा, हे गुरुदेव, हमें किसी गुरुमुख मालिक के प्यारे की सोहबत देना क्योंकि हमारे मन पर सोहबत का असर पड़ता है।''

मैं गुरुदेव सावन–कृपाल का धन्यवादी हूँ कि यह गरीब आत्मा रूहानियत के दिवालियापन पर आई हुई थी। हम सभी रूहानियत में दिवालियेपन पर आए हुए हैं। हमें अपनी इस गरीबी का एहसास नहीं है

कि हम कितने दिवालिएपन पर आए हुए हैं। हम जब अंदर जाते हैं तो हमें धीरे–धीरे पता लगता है कि उस रहमत के समुंद्र ने हमारे ऊपर दया की और हमें रूहानियत देकर मालोमाल कर दिया। आपके आगे गुरु नानकदेव जी का शब्द रखा जा रहा है, गौर से सुनने वाला है:

सरण परे गुरदेव तुमारी।। तू समरथ दयाल मुरारी।।
तेरे चोज न जाणै कोई तू पूरा पुरख बिधाता हे।।

गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैं, ''हे गुरु रूप परमात्मा! मैं तेरी शरण में आया हूँ क्योंकि तू समरथ है, तू चाहे तो खाली बर्तन भर सकता है, तू चाहे तो नजदीक करता है और तू चाहे तो दूर करता है। हम जीवों को तेरे चोज समझ नहीं आते। तू कर्म की रेखा खींचने वाला विधाता है कि इसको गुरु मिलेगा या नहीं मिलेगा? यह तेरा अपना ही फैसला है इसलिए हम तुझे नमस्कार करते हैं कि हम तेरे चुनाव में आए हैं। तू समरथ है, तू जिसे चाहे भक्ति का दान बख्शे।''

तू आदि जुगाद करेंह् प्रतिपाला।। घट घट रूप अनूप दयाला।।

तू आदि–जुगादि से हर युग में जीवों की प्रतिपालना करता आया है। हमें पता है कि परमात्मा ने इतनी बड़ी दुनिया बनाकर इसे लावारिस नहीं छोड़ा हुआ कोई न कोई जरूर इस दुनिया को पैदा करने वाला और इसकी परवरिश करने वाला है। तू सदा ही दया करता है, शब्द रूप होकर हर एक घट के अंदर व्यापक है। जिस तरह दूध के अंदर घी है लेकिन हमें नजर नहीं आता। जब हम यतन से दूध की दही जमाकर दही को बिलोकर उसमें से मक्खन निकालते है फिर मक्खन को गर्म करके उसमें से छाछ को अलग कर देते हैं तो उसमें से घी निकल आता है। तब हमें पता लगता है कि दूध के अंदर ही घी छिपा हुआ था।

इसी तरह परमात्मा हमारे अंदर घी की तरह छिपा हुआ है, परमात्मा हर एक घट के अंदर बैठा हुआ है। जिन महात्माओं की आँखें खुल जाती

हैं वे अंदर उस परमात्मा को देखते हैं। जब हम परमात्मा को अंदर देख लेते हैं तो हमें समझ आ जाती है कि वह पशु–पक्षी, चिंद–परिंद हर एक की पालना कर रहा है वह हर एक के अंदर ही व्यापक है।

गुरु गोबिंद सिंह जी कहते हैं, ''परमात्मा हाथी की पुकार बाद में सुनता है एक छोटी सी चींटी की पुकार पहले सुन लेता है।'' गुरु नानकदेव जी कहते हैं, ''आप किसके आगे पुकार करते हैं वह तो आपके बोले बिना ही आपकी हर हरकत को समझ लेता है।''

परमात्मा बड़ी युक्ति से हर एक घट में व्यापक है अगर हमें यह बात समझ आ जाए कि परमात्मा हमारे अंदर है तो क्या हम कोई गुनाह करेंगे? एक छोटा सा बच्चा किसी दुकान पर बैठा हो तो हम वहाँ से एक पेंसिल तक नहीं उठाते कि इंसान का बच्चा हमें देख रहा है, हम उसका कितना डर समझते हैं कि यह किसी को बता देगा। वह परमात्मा शब्द रूप गुरु हमारे अंदर बैठा है। हम सोचते हैं कि हम जो कुछ करते हैं हमें कौन देख रहा है किसने हमसे हिसाब पूछना है?

प्यारेयो! हमारे अंदर परमात्मा के लिए उस पाँच साल के बच्चे जितना भी डर नहीं क्योंकि उस बच्चे को हम देख रहे हैं, परमात्मा को देख नहीं रहे। अगर हम परमात्मा को देख लें तो हमें पता लग जाएगा कि परमात्मा हमारी हर हरकत हर करतूत को देख रहा है फिर हम पाप और जुल्म से भी डरते हैं। महात्मा यही कहते हैं कि आप हर एक के साथ ऐसा व्यवहार करें जैसा व्यवहार आप अपने साथ चाहते हैं।

ज्यों तुध भावै तिवैं चलावेंह् सभ तेरो कीआ कमाता हे।।

गुरु नानकदेव जी महाराज परमात्मा के आगे फरियाद करते हैं, ''तू जीव को जिस तरफ चाहे भेज सकता है। जीव को अंदर से जैसा इशारा मिलता है जीव वही क्रिया करता है, यह सब कुछ तेरे हाथ में है।''

अंतर जोत भली जगजीवन।। सभ घट भोगै हर रस पीवन।।

वह ज्योत वह प्रकाश हर एक के अंदर है। सन्त हमें उसी प्रकाश और उसी ज्योत के साथ जोड़ने के लिए आते हैं। हमारी देह के नौं दरवाजे और छह चक्र हैं। योगी लोग वजूद के अंदर दाखिल होने के लिए पहले निचले चक्रों से अपना अभ्यास शुरु करते हैं। पहले जमाने में अच्छी सेहत थी। सारे ही अच्छी सेहत की वजह से कुछ साल लगाकर इस क्रिया को कर लेते थे लेकिन फिर भी युग बीत जाते थे, लाखों में कोई एक आध विरला ही कामयाब होता था।

गुरु अर्जुनदेव जी के समय का वाक्या है जब आप श्री अमृतसर साहब में तालाब और मंदिर बनवा रहे थे, वहाँ खुदाई हो रही थी। जमीन के अंदर से एक मठ निकला जब उस मठ को फोड़ा तो उसमें से एक योगी निकला। उस योगी ने पूछा, ''अब कौन सा युग है?'' आप अंदाजा लगा सकते हैं किस तरह योगी लोग प्राणों को अंदर खींचकर बैठ जाते थे, श्वासों की क्रिया बढ़ा लेते थे लेकिन इतनी उम्र का क्या फायदा जब परमात्मा मिला ही नहीं। वे पहुँचते भी आँखों के पीछे तीसरे तिल पर ही हैं।

सन्त–महात्मा दया के पुंज होते हैं। उन्हें परमात्मा ने परमिशन देकर संसार में भेजा होता है, वे नामदान के वक्त पहले ही दिन सेवक को अपनी आत्मा का उभार देकर नाद और ज्योत का अनुभव करवा देते हैं। हमारे अंदर नाम का दीपक, नाम की ज्योत जला देते हैं। हमें अपने कर्मों के अनुसार थोड़ी सी पूँजी मिलती है लेकिन यह एक तैयारी है, उत्साह है उसके बाद इसे बढ़ाना सेवक का धर्म होता है।

आपे लेवै आपे देवै तिह लोईं जगत पित दाता हे।।

वह परमात्मा गुरु बनकर अपने आप ही बाहर आकर देता है, अपने आप ही सेवक बनकर लेता है। वह सारी दुनिया का दाता है कि मैंने किसे नाम की दात देनी है किसे नाम के साथ जोड़ना है।

जगत उपाय खेल रचाया।। पवणै पाणी अगनी जीउ पाया।।

परमात्मा ने पाँच तत्वों की दुनिया रच दी है, एक तत्व दूसरे तत्व के खिलाफ है; 'शब्द–नाम' की ताकत ही इन्हें इकट्ठा करके रख रही है। हमें पता है कि किस तरह पानी पृथ्वी को घोल लेता है ये इकट्ठे नहीं रह सकते। अग्नि पानी को खुष्क कर देती है ये भी इकट्ठे नहीं रह सकते। अग्नि को हवा उड़ा लेती है अपने अंदर समा लेती है और हवा आकाश में समा जाती है। आकाश अपने भंडार ब्रह्म मे जाकर समा जाता है लेकिन शब्द की ताकत अंदर होने की वजह से ही ये सारे मिलकर चलते हैं, मिलकर काम करते हैं; वह शब्द–नाम की ताकत है।

देही नगरी नौं दरवाजे सो दसवां गुपत रहाता हे।।

हम इस देही मकान में बैठे हैं जिसके नौं दरवाजे हैं। हमारी आत्मा इन्हीं दरवाजों से बाहर जाती है। श्वास बाहर जाते हैं लेकिन बाहर ठहर नहीं सकते, अंदर शब्द की ताकत इन्हें कंट्रोल कर रही है। इन नौं दरवाजों की लज्जतें फीकी हैं लेकिन परमात्मा ने जो रास्ता हमारे अंदर रखा है जिस रास्ते से हम परमात्मा को पा सकते हैं वहाँ जाकर सच्चाई का पता लगता है। सतगुरु का असली स्वरूप सतनाम होता है। हमें वह दसवें द्वार में पहुँचकर ही नजर आता है, वह दसवां द्वार गुप्त रखा हुआ है। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

नौं दरवाजे प्रकट किए दसवां गुप्त रखीजे
वज्र किवाड़ न खुल्ली गुरु शब्द खुलीजे

परमात्मा वज्र के बहुत सख्त किवाड़ लगाकर अंदर बैठ गया है। वह किवाड़ को खोलने के लिए खुद ही किसी महात्मा का तन धारण करके संसार में आता है। महात्मा उस किवाड़ को 'शब्द–नाम' से खोलते हैं। वह गुप्त है उसे किस तरह प्रकट करना है, यह हमें महात्मा की सोहबत–संगत में जाकर ही पता लगता है।

चार नदी अगनी असराला।। कोई गुरमुख बूझे शबद निराला।।

गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैं कि दुनिया अंडज, जेरज, सेतज और उतभुज की आग में जल रही है। एक अंडो से पैदा होते हैं, एक झिल्ली से पैदा होते हैं, एक मौसम की तब्दीली से पैदा होते हैं। इस राज को कोई गुरुमुख ही समझता है कि किस तरह दुनिया काम, क्रोध की लहरों में बह रही है। हम जहाँ जाकर भी जन्म लेते हैं चाहे निचले जामें में, चाहे ऊँचे जामें में, चाहे औरत के जामें में या मर्द के जामें में हम हर जगह परेशान हैं। कोई बीमारी के हाथों परेशान है, कोई बेरोजगारी के हाथों परेशान है। अगर कभी हमारा भूला हुआ मन महात्मा की सोहबत–संगत में जाता है तो वहाँ जाकर भी हम अपने ही रोने रोते हैं। हम जिस मकसद के लिए महात्मा की सोहबत में जाते हैं कि हम नाम की कमाई करें, रूहानियत की दौलत इकट्ठी करें लेकिन हम उसे एक तरफ रख देते हैं, जैसे आते हैं वैसे ही चले जाते हैं।

महाराज सावन सिंह जी ने पैंतालीस साल नाम का होका दिया। आपने खुल्ले दिल से नाम की दौलत बाँटी, जिसका जैसा बर्तन था वह उनसे वैसा दान लेकर जाता रहा। इसी तरह परमात्मा कृपाल ने पच्चीस साल हर मुल्क में जाकर होका दिया लेकिन जिसका जैसा बर्तन था वह वैसा ही लेता गया। आप कहा करते थे, ''देने वाले का क्या कसूर है? सवाल तो लेने वाले का है।'' हमने सोचना है क्या हमने अपना बर्तन बनाया है, क्या हम सन्तों के पास दुनिया की चीजों के लिए आए है?

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''जो लोग यह कहते हैं कि हमारी बीमारी दूर हो जाए, हमारी बेरोजगारी दूर हो जाए, हमारा मुकद्दमा फतेह हो जाए, लड़का बीमार है वह राजी हो जाए वे लोग यहाँ न आएं तो अच्छा है। सन्तों की दुकान पर ये चीजें नहीं होती सन्तों की दुकान पर तो नाम है। हम सन्तों के पास अपनी आत्मा के उद्धार के लिए आए हैं अगर

हम किसी ऐसी दुकान पर जाएं जहाँ कोयले ही कोयले हैं बेशक वहाँ हम धूप जलाए, आरती उतारें वहाँ से मोती, लाल या हीरे माँगे जब उसकी दुकान में ये चीजें हैं ही नहीं तो वह दुकानदार कहाँ से देगा? इसी तरह जिस दुकान पर हीरे, जवाहरात, मोती हैं अगर हम वहाँ जाकर कोयले माँगे बेशक उसे कितना बुरा भला कह लें जब उसकी दुकान पर कोयले हैं ही नहीं तो वह कहाँ से देगा? नाम हीरा है।'' गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

बिन तुध होर जे मंगणा सिर दुःखां दे दुःख
दे नाम संतोखिया उतरे मन की भुख

हम एक चीज माँगते हैं परमात्मा मेहर करके हमें वह चीज दे देता है लेकिन उसमें से अनेकों ही समस्याएं खड़ी हो जाती हैं फिर हम आकर विनती करते हैं कि ऐसा क्यों हुआ अब आप इसका सुधार करें। अब आप सोचकर देखें यह कैसे हो सकता है?

महाराज कृपाल सिंह जी कहा करते थे, ''अगर सन्त सेवक की सारी दुनियावी अरदासें सुनें तो वह किसी भी जन्म में अपनी आत्मा को सच्चखंड लेकर नहीं जा सकते। सन्त कभी भी सेवक की प्रालब्ध में दखल नहीं देते अगर हम यह कहें कि गर्मी न आए गर्मी तो आएगी अगर कहें कि सर्दी न आए सर्दी तो आएगी। हमारी जो प्रालब्ध बन चुकी है वह तो हमें भोगनी ही पड़ेगी चाहे सुखी होकर भोगें या दुखी होकर भोगें।''

महाराज सावन सिंह जी एक बहुत प्यार भरी मिसाल दिया करते थे कि एक सवार घोड़ा लेकर जा रहा था। आगे जमींदार रहट चला रहा था सवार ने कहा कि मैंने घोड़े को पानी पिलाना है तू रहट को रोक दे क्योंकि घोड़ा आवाज से डरता है। जमींदार ने रहट को रोका तो पानी आगे चला गया। जब रहट चलाया तो घोड़ा आवाज सुनकर फिर भाग गया। जमींदार रहट को रोकता है तो पानी उस जगह नहीं रहता अगर रहट चलाता है तो आवाज होती है। आखिर जमींदार ने सवार से कहा कि घोड़े को पानी तो इस चीं–चीं में ही पीना पड़ेगा।

इसलिए सन्त कहते हैं कि आपकी जो प्रालब्ध बनी है उसे प्यार से भोग लें, मन से कहें कि ये तेरा ही किया हुआ है। अगर हम प्यार और श्रद्धा से भजन–सिमरन करेंगे तो इसमें जरूर रियायत हो जाएगी अगर हमारा कष्ट बहुत सालों का है तो कम हो जाएगा, उसमें जरूर मुनासिब मदद मिलेगी। लेकिन हमें थोड़ी सी भी तकलीफ आती है तो हम सबसे पहले भजन छोड़ देते हैं फिर किस तरह हमारा फायदा होगा? महाराज जी कहते हैं कि इस राज को गुरुमुख ही जानते हैं। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

दुःख सुख सोई ध्याईए

हे परमात्मा! सुख आए या दुःख आए, हमने सुख–दुःख में तेरा ही ध्यान करना है।

साकत दुरमत डूबेंह् दाझेंह् गुर राखे हर लिव राता हे।।

हम साकत हैं, मनमुख है, मुग्ध हैं, गवार हैं। परमात्मा ने हमें हीरा जन्म दिया है लेकिन हम इस जन्म को इन्हीं परेशानियों में खो देते हैं, इन्हीं की आग में जलते रहते हैं। गुरुमुख अपनी लिव उस 'शब्द–नाम' के साथ लगाकर रखते हैं। कबीर साहब कहते हैं:

देह धरी का दंड सब काहू को होय
ज्ञानी भोगे ज्ञान से अज्ञानी भोगे रोय

काल देह धारण करने का दंड, बीमारियां देता है। सन्त हर कर्म से बरी होते हैं लेकिन वे प्यार में आकर सेवक की मुनासिब मदद करते हैं। जो कमाई करते हैं अंदर जाते हैं उन्हें पता है कि जो गुरु और शिष्य के बीच में होता रहता है। सेवक अपनी आँखों से देखता है कि किस तरह मेरी मदद हो रही है। ज्ञानी उसे परमात्मा का भाणा मानकर भोग लेते हैं लेकिन मनमुख रोते–चिल्लाते हुए भोग लेते हैं। ज्ञानी और अज्ञानी दोनों को ही कर्म भोगने पड़ते हैं। सन्त सभी कर्मों से बरी होते हैं उनका ऐसा कोई कर्म नहीं होता जिसका वे हिसाब–किताब चुकाने के लिए आए हैं।

मैं महाराज सावन सिंह जी की खास मिसाल दिया करता हूँ। उन्होंने अपने एक सेवक का बहुत ही कठोर कर्म उठा लिया, उन्हें बुखार हुआ। वही सेवक आपसे पूछता है, ''महाराज जी! आपकी यह हालत, क्या यह आपका कर्म है?'' महाराज जी ने हँसकर कहा, ''यह मेरे किसी खास प्यारे का कर्म है लेकिन वह फिर भी अहसान नहीं जताते।''

अप तेज वाय पृथमी आकासा।। तिन मह् पंच तत घर वासा।।
सतगुर शबद रहै रंग राता तज माया हौमैं भ्राता हे।।
एह मन भीजै शबद पतीजै।। बिन नावैं क्या टेक टिकीजै।।

चाहे आप मन को विषय–विकारों की करोड़ो लज्जतें दे दें इसने तृप्त नहीं होना, यह अंदर और ख्वाहिश पैदा कर देता है। जिस तरह हम आग के ऊपर लकड़ियाँ डालते हैं तो भाँबड़ उठते हैं अगर उसके ऊपर घी डाल दें तो उससे भी ज्यादा भाँबड़ उठते हैं, यही हालत मन की है। यह हिरन की तरह भटकता फिरता है इसे न दिन में चैन है न रात को चैन है। जिस तरह समुंद्र में कछुए अपने मुँह और पैरो को कभी अंदर करते हैं कभी बाहर करते हैं वे कभी टिकते नहीं। जिस तरह दीपक की लौ इधर–उधर हिलती रहती है, टिकती नहीं, यही हालत हमारे मन की है। हमारा मन अंदर कोई न कोई ख्वाहिश उठाए रखता है। हम इस हिरन की तरह भटकते हुए मन को सिर्फ 'शब्द' से ही टिका सकते हैं। गुरु साहब कहते हैं:

राम नाम मन बेध्या अवर की करे विचार

अंतर चोर मुहै घर मंदर इन साकत दूत न जाता हे।।

जिस घर के अंदर चोर आ जाएं और मालिक घर में न हो तो चोरों की मर्जी है कि वे घर में कुछ छोड़कर जाएं या सब कुछ उठाकर ले जाएं, चोर कीमती माल कब छोड़ते हैं। हम इस शरीर रूपी मंदिर में नाम का दीपक नहीं जलाते तो हम घर में नहीं है, हम प्रभु की तरफ सोए हुए हैं।

ये डाकू काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार दिन–रात हमारी पूँजी को लूट रहे हैं और हमने खुशी से इन्हें इजाजत दी हुई है।

दुंदर दूत भूत भीहाले।। खिंचोताण करेंह् बेताले।।

हम सारी जिंदगी जो कर्म करते हैं आखिर में हमें वही ख्याल आते हैं जिस तरह बिल्ली को चूहों के सपने आते हैं। हम सोचते हैं कि चाहे हम जितने भी विषय–विकार भोग लें हमें नाम की तरफ आने की क्या जरूरत है, अंत समय में सतगुरु को याद कर लेंगे। प्यारेयो! हमारे अंदर मन बैठा है, मन की यह ड्यूटी है कि कोई भी आत्मा गुरु भक्ति न कर पाए, मन हर हाल में गुरु भक्ति से हटाता है तो मन अंत समय में किस तरह आपका ख्याल इस तरफ आने देगा?

मैं अपनी जिंदगी का एक मशहूर वाक्या बताया करता हूँ। मैं उन दिनों में वैदिक किया करता था। एक महाजन बीमार हो गया, उसकी शादी नहीं हो रही थी वह सारी जिंदगी शादी के लिए दान–पुण्य करता रहा और कई लोगों से भी कहता रहा लेकिन प्रभु की मौज उसकी शादी नहीं हुई। अन्त समय में मुझे उसके ईलाज के लिए बुलाया गया। मैंने जाकर उसकी नब्ज देखी कि चल रही है या नहीं लेकिन उसका ख्याल शादी की तरफ ही था। उसने मुझसे कहा, ''क्या गाना बाँध रहे हो?'' उस जमाने में हाथ पर धागा बाँधते थे और मुँह को छुहारा लगाते थे। मैंने कहा, ''अब तो काल ही तेरे हाथ पर गाना बाँधेगा।''

कहीं हमारे दिल में यह ख्याल हो कि हम अंत समय में अपना ख्याल नाम के साथ जोड़ लेंगे। हम सारी जिंदगी जो ख्याल करते हैं आखिरी समय में वही ख्याल हमारे सामने आएंगे। अगर बिल्ली अंत समय में यह कहे कि मैं सन्तनी बन जाऊँ तो वह किस तरह सन्तनी बन सकती है?

शबद सुरत बिन आवै जावै पत खोई आवत जाता हे।।

इन डाकुओं के हाथों जिन्दा भी मरे जैसा है। जब मौत आती है यमदूत आकर पकड़ लेते हैं और हमने जिंदगी में जो कुछ किया होता है वे उसकी सजा देते हैं, उनके हाथों मार खाता है और परेशान होता है। यम उन्हें लेने के लिए आते हैं जिन्होंने जिंदगी में अत्याचार किए होते हैं, जो नाम नहीं जपते यह उनकी हालत होती है।

कूड़ कल्लर तन भसमै ढ़ेरी।। बिन नावैं कैसी पत तेरी।।

इस तन की क्या विशेषता है, पहले पानी की बूँद है आखिर मिट्टी की मुट्ठी बन जाती है। यह देह यहीं छोड़ जानी है, न सेवक की देह रहेगी न गुरु की देह रहेगी। कोई इसे आग के हवाले कर जाता है, कोई मिट्टी के हवाले कर जाता है। यह देह किराए का मकान है अगर नाम नहीं, परवाना नहीं तो किस तरह तेरी पत्त रहेगी?

मैं मिसाल दिया करता हूँ हमने अमेरिका जाना हो तो हम वहाँ के नुमांइदो के पास वीजा लेने के लिए जाते हैं। वे जिन्हें मुनासिब समझते हैं उनके वीजे के ऊपर अपनी मोहर लगा देते हैं हम बड़ी आसानी से बाईज्जत उस मुल्क में चले जाते हैं, अपने रिश्तेदारों से जाकर मिलते हैं।

इसी तरह सन्त–महात्मा इस संसार में परमात्मा के नुमाईंदे बनकर आते हैं, उन्हें परमात्मा ने नाम की मोहर दी होती है। जिन्होंने सच्चखंड जाना है वे महात्मा के पास जाकर नाम की मोहर लगवाते हैं फिर आगे जाकर उन्हें कोई नहीं रोकता।

इसी मोहर के मुत्तलिक गुरु रामदास जी महाराज से पूछा गया, ''इस मोहर का क्या फायदा है?'' गुरु रामदास जी कहते हैं:

जे जिया दंड को ले न जुगात सतगुरु कर दीन्ही धुर की छाप

जिस रास्ते से हमारी आत्मा ने जाना है वह रास्ता बहुत भयानक है अगर हम नाम की मोहर लगवा लें तो रास्ते में कोई दंड नहीं लगता, न

रास्ते में यमों को कोई हिसाब ही देना पड़ता है क्योंकि सतगुरु ने पूरे नाम की मोहर लगा दी है। जहाँ जाता है वे मोहर लगी हुई देखते हैं।

धर्मराय हर का कीया हर जन सेवक नेड़ न आवे

धर्मराय को हुक्म है कि जिनके ऊपर मोहर लगी है तूने उनके नजदीक नहीं जाना। आप अनुराग सागर पढ़ते हैं उसमें काल ने कहा था, ''आप मुझे अपनी मोहर दिखा दें, मैं जिसके ऊपर वह मोहर लगी हुई देखूंगा उसे कुछ नहीं कहूँगा।'' सन्त, काल के दाँव–पेचों को अच्छी तरह जानते हैं। सारे ही सन्तों ने इस मोहर का जिक्र किया है।

बांधे मुकत नाहीं जुग चारे जमकंकर काल पराता हे।।

चाहे सतयुग, त्रेता या द्वापर है किसी भी युग में नाम के बिना मुक्ति नहीं। मुक्ति जब भी होगी नाम से ही होगी, इसी रास्ते पर आना पड़ेगा 'शब्द–नाम' की कमाई करनी पड़ेगी। गुरु साहब कहते हैं:

अनेक योनि भरमाए बिन सतगुरु मुक्ति न पाए
फेर मुक्ति पाए लग चरणी सतगुरु शब्द सुनाए

जम दर बांधे मिलह् सजाई।। तिस अपराधी गत नहीं काई।।

गुरु नानकदेव जी महाराज ने हमें डराने के लिए नहीं लिखा, महात्मा जो आँखों से देखते हैं वही बयान करते हैं। जिस तरह पुलिस अपराधी को पकड़कर थाने ले जाती है वहाँ जो आता है, वह कहता है कि इसे मारो इसने अत्याचार किए हैं, वहाँ कौन रहम करता है? पहले हम मन के कहने पर सब कुछ करते हैं। हमने मन को अपना खसम–खसाई बना रखा है। जो दुश्मन का कहना मानेगा क्या वह कभी कामयाब हो सकता है? परमात्मा ने मनुष्य का जामा एक अमूल्य हीरा दिया था हमने जिसे दुनिया के रसों–कसों में गँवा दिया फिर यमदूतों के हाथो ख्वार होते हैं। यमदूत पकड़ लेते हैं डंडे मारते हैं वहाँ अपराधी की कोई पूछ–परतीत नहीं।

करण पलाव करे बिललावै ज्यों कुंडी मीन पराता हे।।

शिकारी कुंडी पर आटा या गोश्त लगाकर कुंडी को समुंद्र में फैंक देते है। कुंडी मछली के गले में फँस जाती है जब मछली का कीमा–कीमा होता है वह तड़पती है। यही हालत जीव की है यमदूत इसे मारते है, पीटते है यह तड़पता है रोता है लेकिन वहाँ कौन रहम करता है?

साकत फांसी पड़ै इकेला।। जम वस कीआ अंध दुहेला।।

गुरु नानकदेव जी कहते हैं, ''जब हम यहाँ से जाते हैं तो न माता साथ जाती है, न पिता साथ जाता है, न बहन न भाई और न ही बिरादरी साथ जाती है। अकेले आते हैं और अकेले ही जाते हैं। जो कुछ बीतती है अकेले के साथ ही बीतती है। ये सब मारें सूक्ष्म शरीर को ही पड़ती हैं।''

राम नाम बिन मुकत न सूझै आज काल पच जाता हे।।

आप कहते हैं, ''मुक्ति नाम में है लेकिन ये नाम की तरफ आया ही नहीं। पता नहीं कब साँस निकल जाए!'' कबीर साहब कहते हैं, ''जिंदगी पानी का बुलबुला है, हवा पड़ती है बुलबुला बन जाता है हवा निकल जाती है फिर पानी बन जाता है; इस जिंदगी की इतनी ही मुनियाद है।''

सतगुर बाझ न बेली कोई।। ऐथै ओथै राखा प्रभ सोई।।

आप कहते हैं, ''माता–पिता बहन–भाई ये अपने मतलब के लिए हमारे साथी बने हुए हैं। अन्त समय में कोई साथ नहीं जाता अगर कोई सच्चा रिश्तेदार या सच्चा साथी है तो वह सतगुरु है। सतगुरु हमारी यहाँ मुनासिब मदद करता है और अगली दुनिया में भी मदद करता है, यह उसका बिरद होता है।''

राम नाम देवै कर किरपा इयों सललै सलल मिलाता हे।।

गुरु हमारा बेली–साथी बनता है, हमारे ऊपर कृपा करता है। वह हमारे ऊपर दया करके हमें नाम का दान देता है, वह कोई अहसान नहीं करता। वह हमसे कौम या मजहब नहीं छुड़वाता।

सन्त कहते हैं कि आप अपने रीति–रिवाज के मुताबिक शादी–ब्याह करें। सन्त सेवक की दुनियावी जिंदगी में कभी दखल नहीं देते। सन्त सेवक से सिर्फ भजन–सिमरन की ही आशा रखते हैं कि भजन करके लाएं। इससे बड़ी कृपा और क्या हो सकती है कि वह हमसे बेटे–बेटियाँ नहीं छुड़वाते अपना बोझ खुद उठाते हैं। मुफ्त का कोई नौकर है तो वह सतगुरु ही है अगर हम दुनिया में ऐसे बेली–साथी ढूंढ़े तो करोड़ों में कोई एक आध ही मिलेगा जो निस्वार्थ हमारी सेवा करे।

सलल पानी को कहते हैं। जिस तरह समुंद्र भी पानी है लहर भी पानी है इसी तरह हमारी आत्मा परमात्मा की अंश है। सतगुरु की कृपा से परमात्मा में से आई थी और परमात्मा में ही मिल जाती है।

भूले सिख गुरु समझाए।। उझड़ जांदे मारग पाए।।

सबसे पहले महात्मा अपना सतसंग जारी करते हैं। यह उपाय वे हमारे भूले हुए मन को समझाने के लिए करते हैं। वे अपनी सेहत, बीमारी का ख्याल नहीं करते। वे हमें समझाने के लिए बाहरी तौर पर ऊद्यम करते हैं। जब हम कमाई करके अंदर जाते हैं तो अंदर काल ने बहुत भूल–भुल्लैया बनाई हुई है, हम जहाँ भूलते हैं वहाँ सतगुरु साथ है। वह एक सैंकिड के लिए भी दूर नहीं होता वहाँ भी समझाता है, ''बेटा! तू मेरे पीछे–पीछे आ, तुझे किसी की तरफ देखने की जरूरत नहीं।'' जो अंदर जाते हैं उन्हें पता है कि गुरु किस तरह कदम–कदम पर हमारी अंदर और बाहर भी रखवाली कर रहा है। यह उन महात्माओं की बानी है जिन्होंने हर जगह गुरु को काम करते हुए देखा है। गुरु के लिए सच्चा प्यार, सच्ची इज्जत अंदर जाकर ही आती है, वही गुरु को सतपुरुष कुलमालिक समझता है।

तिस गुर सेव सदा दिन रातीं दुख भंजन संग सखाता हे।।

आप प्यार से कहते हैं, ''सिख भूलते आए, गुरु समझाते आए। उस गुरु की भक्ति करें जो अंदर–बाहर हमें रास्ता दिखाता है, हमारी रहनुमाई करता है।''

गुर की भगति करह् क्या प्राणी।। ब्रहमै इंद्र महेस न जाणी।।

यह तो उस परमात्मा सावन–कृपाल की दया है जो हम उसकी भक्ति में शामिल हुए हैं। गुरु की भक्ति स्वर्गों के राजा इन्द्र को नहीं मिली। गुरु की भक्ति ब्रह्मा, विष्णु और शिव के पल्ले न पड़ी। अंधे की क्या ताकत है कि वह सुजाखे को पकड़ ले जब तक सुजाखा आवाज लगाकर अंधे के हाथ में अपनी अंगुली नहीं पकड़ा देता। गुरु की भक्ति हर एक नहीं कर सकता। जिन पर उसकी रहमत होती है वही भक्ति कर सकते हैं।

सतगुर अलख कहो क्यों लखीऐ जिस बखसे तिसह् पछाता हे।।

आप प्यार से कहते हैं, ''सतगुरु परमात्मा में समाया होता है। जिस तरह परमात्मा अलख है उसी तरह गुरु अलख है। जिस पर वह रहमत करे जिसे अपनी पहचान बख्शे वही उसे पहचान सकता है।''

अंतर प्रेम परापत दरसन।। गुरबाणी स्यों प्रीत सुपरसन।।

जिनके अंदर प्रेम–प्यार है, गुरु के लिए तड़प है उन्हें जरूर गुरु का दर्शन प्राप्त होता है। उनकी प्रीत गुरु बानी के साथ लग जाती है। सन्तों की बानियाँ हमारी बीमारियों का ईलाज बताती हैं।

अहनिस निरमल जोत सबाई घट दीपक गुरमुख जाता हे।।
भोजन ग्यान महां रस मीठा।। जिन चाखया तिन दरसन डीठा।।

जिस तरह यहाँ हमारे तन को भूख लगती है उसी तरह आत्मा को भी खुराक की जरूरत होती है। सन्तों के देश में आत्मा की खुराक दर्शन है, दर्शन ही वहाँ का भोजन है। वहाँ आत्मा 'शब्द–नाम' के भोजन अमृत को चखती है।

दरसन देख मिले बैरागी मन मनसा मार समाता हे।।

उस भोजन शब्द–अमृत का रस पीकर आत्मा के अंदर सच्चा वैराग्य उत्पन्न होता है। दुनिया के सारे वैराग्य फीके लगने लग जाते हैं।

सतगुर सेवेंह् से परधाना।। तिन घट घट अंतर ब्रहम पछाना।।

वही सच्चे बादशाह, सच्चे प्रधान हैं जो सतगुरु की भक्ति में लग जाते हैं।

नानक हर जस हरजन की संगत दीजै जिन सतगुर हर प्रभ जाता हे।।

गुरु नानकदेव जी महाराज ने इस शब्द को शुरु करते समय कहा था कि हे गुरुदेव! मैं तेरी शरण में आया हूँ तू पूर्ण है, तू समरथ है; दया करने के लिए आया है। अगर तू हमारे ऊपर रहम करना चाहता है तो हमें अपने प्यारों की संगत बख्श ताकि हमारा भूला हुआ मन तेरी याद में बैठ जाए।

इस शब्द में गुरु नानकदेव जी ने **सन्तों की महिमा**, नाम की महिमा गाई है। हमें भी चाहिए कि हम भी उस भक्ति में लगकर अपने जीवन को सफल बनाएं। ***

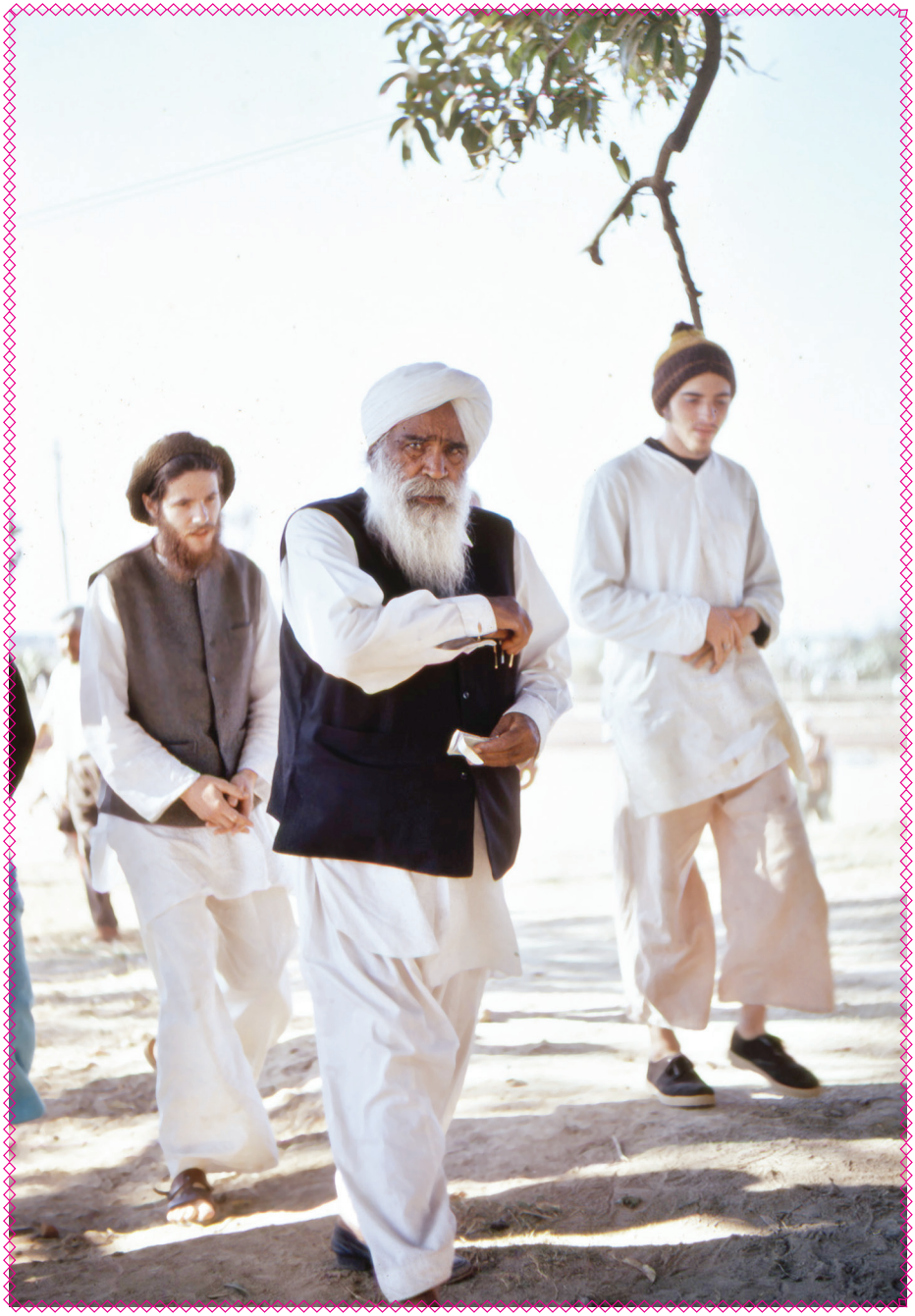

परम सन्त कृपाल सिंह जी महाराज

आपने हमेशा प्रोत्साहित किया कि हमें अपना ज्यादा से ज्यादा समय अभ्यास में देना चाहिए जिससे हमारी अंदरूनी तरक्की हो और हम गुरु स्वरूप को देख सकें। आप अक्सर कहा करते थे, ''जिनकी रातें बन गई उनका सब कुछ बन गया। ज्यादातर अपराध रात को ही होते हैं। चोर–डाकु अंधेरे में अपना काम करते हैं, कातिलों के लिए भी रात को काम करना आसान होता है। काम से भरे लोग अपनी इच्छाएं रात को ही पूरी करते हैं। अच्छे विद्यार्थी अक्सर रातों का सदुपयोग करते हैं।''

इस रास्ते के प्रेमी में अपने प्यारे को देखने का जुनून होना चाहिए, उसे रातों का सदुपयोग करना चाहिए। रात के समय कोई हमें परेशान नहीं करता, रात के समय दुनियावी शोर–शराबा नहीं होता। रात का समय अभ्यास के लिए अनुकूल होता है जिससे हमारी कोशिश बेहतर परिणाम लाती है। इस रास्ते पर चलने वाले जिन प्रेमियों का अन्त नजदीक है वे रातों को ज्यादा अहमियत दें।

आप लोग अहंकार की वजह से अपना नुकसान कर रहे हैं, आप अपना असली काम करें। यह असली काम इंसानी जामें में ही किया जा सकता है। रोज अपने जीवन का निरीक्षण करें। अपनी कमियों को दूर करें भजन–अभ्यास में ज्यादा से ज्यादा समय बिताएं और अंदर गुरु का प्रकाशमयी स्वरूप देखें।

सन्त किसी परिवार या जगह से बंधे हुए नहीं होते। जो प्रेमी उनके पास आते हैं वे उनके लिए बच्चों जैसे होते हैं। जो जितनी ज्यादा ईमानदारी से इस मार्ग पर काम करता है वह गुरु का उतना प्यारा बच्चा

बनता है, उसे गुरु का प्यार और खुशी मिलती है। आप आलस्य को त्यागें और इस अमूल्य मौके का फायदा उठाएं। गुरु की आज्ञानुसार कार्य करें ताकि बहुत देर हो जाने पर आपको पछताना न पड़े।

इस रास्ते में सादगी ज्यादा मददगार है। हम साधारण तभी बन सकते हैं जब हमारे अंदर की इच्छाएं कम हो। जो लोग महंगे कपड़े पहनते हैं शरीर की सुंदरता के लिए नई–नई चीजों पर भारी खर्च करते हैं, स्वादिष्ट खाने खाते हैं, फिल्में और नाटक देखते हैं। क्या यह सब करने के बाद शायद ही दिल में ऐसा कोई कोना बचा होगा जिसमें गुरु की याद हो?

सतसंग में आना एक रिवाज बन गया है। ज्यादातर लोग सतसंग में देर से आते हैं। कई प्रेमीं तो तब आते हैं जब सतसंग का आधा घंटा भी नहीं रह जाता। ऐसे लोग आश्रम में आकर अपने रिश्तेदारों, दोस्तों से मिलते हैं, विदेशी लोगों के गेस्ट हाउस में जाकर उन्हें अपना महत्व और गुरु से अपनी नजदीकी बताकर प्रभावित करते हैं।

गुरु सभी को एक समान देखता है लेकिन गुरु अपना आप उन्हीं को दे देता है जो गुरु को अपना हृदय दे देते हैं, वे सिर्फ गुरु के लिए ही आश्रम में आते हैं और गुरु में ही विश्वास रखते हैं। आप अपने जीवन को सादा और सुंदर बनाएं। गुरु को सबसे ऊँचा मानकर अपने दिल का हाल उसके आगे रख दें जिससे गुरु आपको कुछ दे सके। गुरु हमेशा उनकी तलाश में रहता है जो कुछ लेना चाहते हैं। गुरु का मिशन सिर्फ देना और देना ही होता है।

फरवरी 1974 में मानव एकता सम्मेलन हुआ था। अमेरिका के एक धार्मिक लीडर को बहुत लोग मानते थे और उसकी छवि भी बहुत अच्छी थी लेकिन वह भारत आने से हिचकिचा रहा था क्योंकि कट्टर लोगों का एक ग्रुप उसके खिलाफ था। उन लोगों ने उसे धमकाया अगर वह भारत आया तो वे लोग उसका कत्ल कर देंगे।

वह प्रेमी पहले अमेरिका में महाराज जी से मिल चुका था। उसने महाराज जी को पत्र लिखा और अपनी परेशानी बताई। महाराज जी ने उसी समय उसे उत्तर भेजा कि जीवन और मृत्यु पहले से तय है, कोई किसी को नुकसान नहीं पहुँचा सकता डरने की कोई जरूरत नहीं। उस सज्जन ने अधिवेशन में भाग लिया और कट्टरपंथियों के बीच इज्जत भी पाई।

एक और धार्मिक नेता जो गीता की बहुत अच्छी व्याख्या करने के लिए मशहूर था। वह बहुत ज्यादा बीमार हो गया, उसका जीवन खतरे में था। महाराज जी उसके पास गए और उसे आश्वासन दिया कि परमात्मा ने अभी उससे बहुत काम लेना है, उसे हिम्मत दी और वह ठीक हो गया।

सन्तमत के रास्ते पर चलने वाले जानते हैं कि गुरु कई बार जीवन बचाने में मदद करते हैं लेकिन गुरु अपने किए को बताते नहीं। अंदरूनी ताकत को गुप्त रखना इस विज्ञान का प्रमुख सिद्धान्त है। सच्चाई यह है कि जिस शारीरिक पीड़ा से उन्हें अपने जीवन में गुजरना पड़ता है यह उनकी दिन–प्रतिदिन कितने ही लोगों की मदद और दया के कारण होती है।

आप कई बार कहा करते थे कि धार्मिक शिक्षाएं एक ही बात कहती हैं कि हर इंसान को अपनी मौत याद रखनी चाहिए। जो अपनी मौत को याद रखता है वह अपने आपको दुनिया की महत्त्वहीन चीजों में नहीं फँसाएगा। वह अपने आपको उस पर न्यौछावर कर देगा जो अंत समय में उसकी मदद करेगा, उस समय केवल गुरु ही मदद करता है इसलिए हमें साँस–साँस के साथ गुरु को याद करना चाहिए।

जब ऐसी महान आत्माएं संसार में आती हैं तो परमात्मा उन्हें जहाँ ले जाता है वे वहाँ अपनी सुगंध फैला देती हैं। इस सुगंध को लेने वाले आकर्षित होकर उनके पास आ जाते हैं और उनसे फायदा उठाते हैं।

एक बार आप बहुत बीमार थे। आपकी पीड़ा देखकर आपके बेटे की आँखों में आँसू आ गए। आपने उसे सांत्वना दी कि मेरा शरीर जरुर

बीमार नजर आ रहा है लेकिन अंदरूनी स्वरूप ने आज भी कई लोगों को अंदरूनी मंडल तक पहुँचाया है। जो लोग शारीरिक रूप में आपके नजदीक बैठे थे उन्हें क्या पता कि आप कौन हैं और आप क्या कर रहे हैं?

मेरा जन्म एक सिक्ख परिवार में हुआ है। इंसान एक सामाजिक प्राणी है। उसके पास जीने के लिए एक शरीर होना चाहिए। बचपन से ही मुझमें परमात्मा को जानने की उत्सुकता थी। हर इंसान का अपना बैकग्राऊंड होता है। मैं गुरु ग्रंथ साहब के एक–एक शब्द को पढ़ता और फिर उस शब्द को लिखता। मैं सारा दिन उस शब्द को ध्यान में रखता कि यह मेरे लिए हिदायत है। जब आप किसी चीज को बार–बार पढ़ते हैं तब आप उसमें से और भी ज्यादा प्राप्त करते हैं।

जब हम वेद पढ़ते हैं तो हम उसे बार–बार दोहराते हैं। दो चार पन्ने पढ़ते हैं और पढ़ते ही जाते हैं लेकिन हमें पता नहीं होता कि हमने क्या पढ़ा है? उसके बाद हम भूल जाते हैं लेकिन मैंने ऐसा नहीं किया। जिसका परिणाम यह था कि सभी वेद–ग्रंथ यही कहते हैं कि परमात्मा है।

मेरे स्वभाव में ऐसा दृढ़ विश्वास था, मैं कह सकता हूँ कि परमात्मा है। सभी ग्रंथ कहते हैं अगर आप परमात्मा को देखना चाहते हैं तो किसी ऐसे से मिलें जिसने परमात्मा को देखा हो, जैसे आप मुझे देख रहे हैं और मैं आपको देख रहा हूँ। मैंने जितना ज्यादा सिक्ख ग्रंथों और दूसरे धर्म के ग्रंथों को पढ़ा तो इस बारे में मुझे और भी ज्यादा ज्ञान होता गया।

जब आप किसी धर्मस्थान पर जाते हैं तब आप अपने साथ किसी मार्गदर्शक को लेकर जाएं तो आपके लिए आसान हो जाएगा। अगर आपको अपना देश छोड़कर विदेश जाना है तो आप यह जानने के लिए डायरेक्टरी देखेंगे कि वहाँ पहुँचने के क्या साधन है, कैसे जाना चाहिए, वहाँ जाकर कहाँ रहेंगे और हमें कितने पैसे चाहिए? डायरेक्टरी में हर चीज है लेकिन वह बोलती नहीं अगर कोई आदमी आपके पास आकर यह कहे

कि वह उस जगह से आया है तो आप क्या करेंगे? स्वाभाविक है कि आप डायरेक्टरी बंद करके उसकी बात मानेंगे।

ग्रंथ हमें बताते हैं कि जिसने परमात्मा को जान लिया है आप उसके चरणों में बैठें, किताबों में सिर्फ विवरण है। आप उसका साथ लें जो उस जगह पहुँच चुका है फिर आपको फिक्र करने की जरुरत नहीं कि कहाँ जाना है, कहाँ रूकना है? क्योंकि वह जानता है, वह वहाँ जा चुका है।

1400 पन्नों का गुरु ग्रंथ साहब सिक्ख धर्म का बहुत बड़ा खजाना है। इसमें महान गुरुओं की शिक्षाएं हैं। दुनिया में सबसे पुराने ग्रंथ और वेद भी हैं, उन ग्रंथों में कई ऋषियों के कथन हैं जो गुरु के बारे में बताते हैं।

सिक्खों के पाँचवे गुरु अर्जुनदेव जी ने पहले के चार गुरुओं की बानी को इकट्ठा किया और इसमें अपनी बानी मिलाकर गुरु ग्रंथ साहब की रचना की। गुरु अर्जुनदेव जी ने कुछ पन्ने खाली छोड़कर गुरु ग्रंथ साहब को बंद कर दिया। उस समय लोगों ने आपसे पूछा कि आप ऐसा क्यों कर रहे हैं? तब गुरु अर्जुनदेव जी ने कहा कि इसमें नौंवे और दसवें गुरु की बानी भी दर्ज की जाएगी।

गुरु अर्जुनदेव जी ने गुरु ग्रंथ साहब में यही कहा है, ''मैं और मेरा पिता एक हैं।'' आप इस ग्रंथ को जितना ध्यान से पढ़ेंगे इसमें से आपको अनमोल रत्न मिलेंगे। मैं मिशनरी स्कूल में पढ़ता था। मैंने सभी धर्मों के ग्रंथ पढ़े हैं। सब ग्रंथ एक ही बात कहते हैं कि परमात्मा एक है अगर आप परमात्मा से मिलना चाहते हैं तो उसके चरणों में बैठें जिसने परमात्मा को देखा है। ईसा मसीह ने यही कहा है कि बेटा, बाप को जानता है। मुसलमानों और हिन्दुओं के सभी लेख यही कहते हैं कि आपको परमात्मा तक पहुँचने का तरीका ढूंढ़ना चाहिए।

मैंने अपने इर्द–गिर्द देखा कि बहुत सारे गुरु हैं लेकिन मैं किसे अपना गुरु मानूं? हम तीन भाई थे लेकिन हम दो भाईयों ने आपस में बात की

कि जिसे पूर्ण गुरु मिल जाए वह दूसरे भाई को गुरु के बारे में बताएगा। एक बार मेरे भाई ने मुझे पत्र लिखा कि मैंने एक महान गुरु ढूंढ़ लिया है, तुम आ जाओ। मैं वहाँ गया और मैंने उस गुरु से कहा कि मेरे अंदर दिन–रात नशा रहता है लेकिन कभी तीन महीने बाद, कभी पाँच महीने बाद वह नशा एक दो दिन के लिए टूट जाता है तब मैं बहुत परेशान होता हूँ इसमें आप मेरी क्या मदद कर सकते हैं? उसने कहा, ''तुम्हें अपना शरीर अपना मन और अपनी आत्मा मुझे देनी होगी तभी मैं तुम्हें कुछ दे सकता हूँ।''

मेरे दिल में ख्याल आया कि यह आदमी मेरे शरीर और मेरी जायदाद के पीछे है, यह मेरे ज्ञान को खत्म करना चाहता है। मैं उसे नमस्कार करके वापिस आ गया। त्याग तभी आता है जब आपको कुछ योग्यता दिखे। प्रेम कुछ और होता है लेकिन जब आप प्रेम में किसी को अपना आप समर्पण कर देते हैं तब आपके ऊपर उसका नियंत्रण हो जाता है और उसे आपका ख्याल रखना पड़ता है।

मैं एक ऐसे इंसान को देखा करता था जो हर समय परमात्मा के नशे में रहता था। उसके रहने का तरीका ऐसा था कि कोई भी उससे बात

करने की हिम्मत नहीं करता था। उसका नाम बाबा काहन था। वह फालतू लोगों को अपने पास नहीं आने देता था। जो लोग उससे मिलने जाते वह उन्हें गालियाँ देता था फिर भी परमात्मा के चाहवान उसके पास जाते थे। वे जिस मकसद से उसके पास जाते थे उनका मकसद हल हो जाता था।

मैं उस समय स्कूल में पढ़ता था, मैं भी बाबा काहन के पास जाया करता था। मैं देखा करता था कि वे वहाँ आए हुए लोगों को गालियाँ देते और वापिस जाने के लिए कहते। बाबा काहन मुझे बुलाकर कहते, ''सरदार! तुम्हें क्या चाहिए?'' मैं उनसे कहता कि मैं सिर्फ आपके दर्शन करने के लिए आया था। बाबा काहन कहते, ''ठीक है जाओ।'' मैं हर समय परमात्मा के आगे प्रार्थना किया करता था कि आप मुझे किसी ऐसे से मिलवाएं जिसने आपको देखा है और वह मुझे भी दिखा सके। ऐसा न हो कि मैं किसी ऐसे के पास चला जाऊं जो आपसे कभी न मिला हो तो मेरे भाग्य का क्या होगा? यहाँ बहुत से गुरु हैं मैं किसे चुनूँ?

सन् 1917 की बात है मैं जब अभ्यास में बैठता तो मुझे अंदर ऐसे स्वरूप के दर्शन होते तब मुझे लगता कि शायद यह गुरु नानकदेव जी हैं, वह स्वरूप मुझसे बातचीत करता। मुझे नदियां बहुत अच्छी लगती थी। मैं सारी–सारी रात नदी के किनारे बैठा रहता क्योंकि बहता हुआ पानी ध्यान लगाने में बहुत मदद करता है।

पेशावर से मेरा ट्रान्सफर नौशेरा हो गया वहाँ भी नदी बहती थी और मैं उसके किनारे घंटों बैठा रहता, मुझे तैरने का भी बहुत शौंक था। सन् 1924 में मेरा ट्रान्सफर लाहौर हो गया। जब मैंने सुना कि लाहौर के पास ही ब्यास दरिया है तो मैं ब्यास दरिया देखने के लिए चल पड़ा। ब्यास स्टेशन पर उतरकर मैंने वहाँ के स्टेशन मास्टर से पूछा कि ब्यास दरिया को कौन सा रास्ता जाता है? उसने कहा, ''क्या आप सन्तों के दर्शन करने आए हैं?'' मैंने पूछा, ''क्या यहाँ सन्त भी रहते हैं?'' उसने कहा,

''हाँ! यहाँ दरिया के किनारे एक अनुभवी महापुरुष रहते हैं।'' मैंने कहा यह तो बड़ी अच्छी बात है कि एक पंथ दो काज। सन्तों के दर्शन हो जाएंगे और दरिया की सैर भी हो जाएगी।

जब मैं डेरा पहुँचा तो महाराज सावन सिंह जी अंदर कमरे में भोजन कर रहे थे। आप जब बाहर आए तो मैंने देखा कि यह तो वही महापुरुष हैं जो सात साल से अंतर में मुझे दर्शन दे रहे हैं और दिव्य मंडलों का मार्गदर्शन कराते चले आ रहे हैं। मैंने आपसे पूछा, ''हुजूर! आपने अपने चरणों में लाने में इतनी देर क्यों की?'' महाराज सावन सिंह जी ने कहा, ''मुलाकात का यही उचित अवसर था।''

जैसा कि मैंने अपने बड़े भाई जोधसिंह के साथ यह तय किया हुआ था कि मुझे कोई अनुभवी महात्मा मिला तो मैं तुम्हें बता दूँगा अगर तुम्हें मिले तो तुम मुझे खबर कर देना। मैंने अपने बड़े भाई जोधसिंह को तार भेजी कि गुरु मिल गया है तुम भी आ जाओ।

मैं हर रविवार को डेरा ब्यास जाया करता था। महाराज सावन सिंह जी मेरी राह ऐसे देखते जैसे पिता अपने बेटे के आने की राह देखता है। फरवरी के शुरू के दिनों में डेरा ब्यास में नामदान का कार्यक्रम था। उस दिन बाहर वाले कमरे में बहुत से प्रेमियों को नामदान दिया गया और मुझे अंदर अलग कमरे में नामदान दिया गया।

महाराज सावन सिंह जी ने प्रेमियों को रोजाना ढ़ाई घंटे अभ्यास करने का हुक्म दिया और मुझसे कहा कि तुमने कम से कम छह घंटे अभ्यास करना है और इससे ज्यादा जितनी तुम्हारी इच्छा हो। तुम जल्दी अपना कोर्स पूरा करो क्योंकि आगे चलकर तुमने ही काम करना है।

उसी को गुरु माना जा सकता है जो शुरु में आपको कुछ अनुभव दे। पहली ही मुलाकात में आपका पर्दा खोल दे, आपको सालों साल मौत के समय का इंतजार करने की जरूरत नहीं। ***

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविंद से.....

24 मार्च 1989

भजनों द्वारा प्रार्थना

16 पी.एस. राजस्थान

मैं अपने प्यारे परमात्मा कृपाल का बहुत आभारी हूँ जिन्होंने हमें भजनों द्वारा प्रार्थना करने का यह बहुत आसान तरीका दिया है।

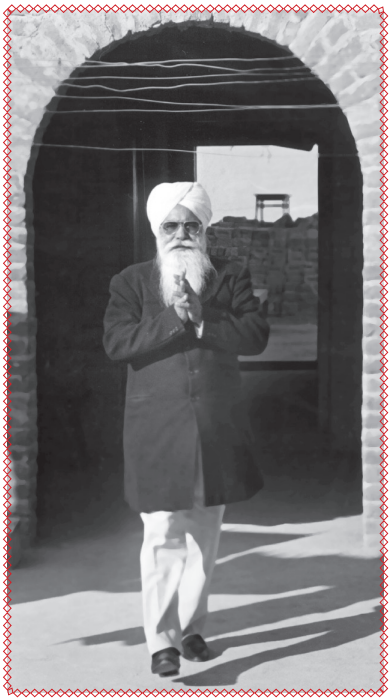

आप जानते हैं काल की रचना इस तरह है कि हमें पता नहीं लगता कि हम सुख–दु:ख किस कारण भोग रहे हैं? अच्छे कर्मों का फल यह है कि हम अच्छे घर में जन्म लेते हैं हमारी बुद्धि अच्छी होती है और संसार में हमें आराम मिलता है। बुरे कर्मों की सजा गरीब घर में जन्म लेते हैं बेरोजगारी और बीमारी का दु:ख मिलता है।

स्वामी जी महाराज अपने गुरु से प्रार्थना करते हुए कहते हैं, ''हे परमात्मा! हम सौभाग्यशाली हैं जो आपकी शरण में आए हैं। हम आपके गुणों का बखान नहीं कर सकते।''

भाग्यशाली आत्माएं भजनों द्वारा अपने गुरु के आगे प्रार्थना करती हैं कि हम अवगुणों से भरे हुए हैं और इस संसार में बहुत दु:ख झेल रहे हैं अब हम आपकी शरण में आ गए हैं, आप हमारे ऊपर दया करें। आप बहुत दयालु हैं और हमें भरोसा है कि आप हमें माफ कर देंगे।

***

RNI No. RAJHIN / 2003 / 9899

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज